Liberal Movement

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 1885 ई० में हुई। कांग्रेस एक राष्ट्रीय संस्था के रूप में काम करने लगी और उसने भारत का सार्वजनिक कल्याण अपना लक्ष्य रखा। कांग्रेस की स्थापना के आरम्भिक 20 वर्षों में उसकी नीति अत्यन्त ही उदार थी, इसलिए इस काल को कांग्रेस के इतिहास में उदारवादी राष्ट्रीयता का काल माना जाता है। यह राष्ट्रीय कांग्रेस का वस्तुतः शैशवकाल था। इसे सुधारवादी आवेदनिक युग भी कहा जा सकता है। उदारवादियों में से अधिकतर व्यक्ति अंग्रेज सरकार से सहयोग और मित्रता का सम्बन्ध रखकर सुधार के लिए उत्सुक थे। प्रारम्भिक अवस्था में कांग्रेस का मुख्य लक्ष्य प्रशासन में छोटा-मोटा सुधार लाना था।

ब्रिटिश राजतंत्र एवं प्रशासन-व्यवस्था के प्रति उदारवादी भक्ति का भाव रखते थे। उदारवादी नेताओं का मानना था कि संवैधानिक तरीके अपना कर ही हम देश को आजाद करा सकते हैं। उदारवादी लोग भारत में राजनीतिक जागरण के लिए पाश्चात्य शिक्षा के प्रति अपने को कृतज्ञ मानते थे। वे ब्रिटिश न्याय-प्रणाली को सर्वोत्तम मानते थे। ब्रिटेन की विधि-व्यवस्था के प्रति उनकी आस्था थी और वे धीरे-धीरे सुधार लाने में विश्वास रखते थे।

कांग्रेस की लोकप्रियता धीरे-धीरे काफी बढ़ गई प्रथम अधिवेशन में 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया, दूसरे में 434, तीसरे में 607 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। धीरे-धीरे कांग्रेस के सम्मेलन में प्रतिनिधियों की संख्या में बढ़ने उसकी बढ़ती हुई लोकप्रियता को स्पष्ट प्रकट करती थी। कांग्रेस द्वारा राजनीतिक अधिकारों की मांग पेश करने से साधारण जनों का आकर्षण बढ़ा और वे इस संस्था से जुड़ने लगे।

इंगलैण्ड में कांग्रेस का प्रचार- भारत के अतिरिक्त इंगलैण्ड में भी कांग्रेस के विचार और उद्देश्य का प्रचार उदारवादी करना चाहते थे। भारत के प्रति सहानुभूति रखने वाले अंग्रेजों को भारतीय समस्या की ओर आकृष्ट करने के उद्देश्य से 1890 ई० में एक प्रतिनिधि मण्डल इंगलैण्ड भेजा गया और एक समिति की स्थापना की गयी। समिति द्वारा इंगलैण्ड में इण्डिया नामक एक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया। 'इण्डिया' के माध्यम से इंगलैण्ड की

जनता का ध्यान भारतीय समस्याओं की ओर आकृष्ट करने में बहुत अंश तक सफलता मिली।

कांग्रेस के प्रति सरकार का दृष्टिकोण →

आरम्भिक वर्षों में कांग्रेस के प्रति सरकार का दृष्टिकोण उदारवादी था परन्तु ज्यों-ज्यों कांग्रेस की स्थिति मजबूत होने लगी उसने माँगों को अधिक मजबूती से सरकार के सामने रखना आरम्भ कर दिया। जिसका परिणाम यह हुआ कि सरकार कांग्रेस की आलोचना करने लगी। 1887 ई० के पश्चात तो कांग्रेस के प्रति सरकार का रुख और कठोर हो गया।

लार्ड डफरिन, जिसने कांग्रेस की स्थापना में सहयोग किया था, ने इसकी आलोचना करते हुए कहा कि "मुझे उसका भारतीय जनता के प्रतिनिधित्व का दावा बेबुनियाद लगता है। कांग्रेस तो एक ऐसे नगण्य अल्पमत का प्रतिनिधित्व करती है, जिसको एक शानदार और विभिन्न रूपों वाले साम्राज्य के शासन की बागडोर हर्गिज नहीं दी जा सकती।" ब्रिटिश भारत की सरकार ने मुसलमानों को कांग्रेस से अलग करने के लिए उनमें विरोध की भावना को जन्म दिया और उसके इन प्रयासों को काफी सफलता तक मिली। जन 1888 ई० में सर सैय्यद अहमद खाँ ने एंग्लो मुस्लिम डिफेंस एसोसिएशन की स्थापना की। धीरे-धीरे सरकार की नीति भारतीयों के प्रति उदार की जगह कठोर होती गई। अब वह 'फूट डालो राज करो' की नीति का पालन करने लगी। सरकार को कांग्रेस के दमन में इसलिए सफलता नहीं मिली क्योंकि इस संस्था को विशाल भारतीय मध्यम वर्ग

Scanned by TapScanner

का सहयोग प्राप्त था।

बहुत से आलोचकों ने उदारवादी राष्ट्रीय नेताओं की उपलब्धियों की आलोचना की है। उग्रवादियों ने उदारवादियों की आवेदन - निवेदन की नीति को 'भिक्षा माँगने' की नीति कहकर खिल्ली उड़ायी। इस सम्बंध में लाला लाजपत राय ने लिखा है कि "20 वर्षों तक रियासतों और दुःखों को दूर करने के असफल संघर्ष के पश्चात इन्हें रोटी के बदले पत्थर प्राप्त हुए।" इस बात में संदेह नहीं कि उनकी तात्कालिक उपलब्धियाँ नगण्य थी और 19वीं सदी के बदलते हुए ब्रिटिश शासन की प्रकृति के कारण उनकी कई राजनीतिक धारणायें गलत साबित हुईं लेकिन जिन परिस्थितियों में उन्होंने यह कठिन कार्य अपने हाथों में लिया और जो कठिनाइयाँ उनके सम्मुख आईं, उनको देखते हुए उनकी उपलब्धियों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। वे मध्य वर्ग तथा निम्न वर्ग में राष्ट्रीय एकता का भाव जागृत करने में सफल रहे। उन्होंने एक सामान्य शत्रु से भारतीयों को परिचित कराया और एक सशक्त आर्थिक समीक्षा प्रस्तुत कर यह सिद्ध कर दिया कि भारत की गरीबी, बेकारी और आर्थिक पिछड़ापन अंग्रेजों के कारण है।